सेवा करने से जाता है अहंकार : दाती

श्रीश्री 1008 महामंडलेश्वर परमहंस दाती जी महाराज के सानिध्य में आलावास ग्राम में आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में भक्त बढ़चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। सुबह धर्मसभा तो दोपहर में योग की कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। शाम के वक्त भजन गायकों की सुमधुर स्वर लहरियां ग्रामीणों को प्रसन्नचित्त कर रही हैं। आश्वासन बालग्राम में धर्मसभा के विशेष सत्र में दाती महाराज ने श्रद्धालुओं से कहा कि सेवा से ही मनुष्य का अहंकार टूटता है और सेवा ही परमात्मा को पाने का आसान जरिया है। सकारात्मक सोच और परोपकारी जीवन–यापन करना ही सन्मार्ग है। इस भावना को जीवन में आत्मसात करने पर मनुष्य पर देवीय अनुकंपा की धारा अविरल रूप से बहती है। दाती महाराज ने कहा कि जब मनुष्य में अहम व अहंकार की बर्फ पिघलती है तो उसमें अंदर का संत प्रकट होता है। जब अहं की दीवार गिरती है तो मनुष्य का अस्तित्व प्रकट होता है, तब परमात्मा के अलावा कोई भी मौजूद नहीं रहता। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे अपनी दिनचर्या का कुछ हिस्सा निराश्रित व पीड़ित बच्चों की सेवा के लिए भी निकालें। उन्होंने गुरुकुल में अध्ययनरत विद्यार्थियों को धर्म के रास्ते पर चलकर सेवा के जरिए अपना जीवन सुधारने की सीख भी दी।

■ **बंदरों के लिए 52 बोरी चने वितरित :** श्रीश्री 1008 महामंडलेश्वर परमहंस दाती जी महाराज द्वारा वन्य जीवों के लिए भोजन-पानी की व्यवस्था को लेकर चलाए गए अभियान के तहत बंदरों के लिए 52 बोरी चने वन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारियों को वितरण किए गए। लाल महाराज जी ने बताया कि अभयारण्य में भोजन-पानी के अभाव में जीव-जंतु आबादी क्षेत्र में रुख कर रहे हैं। यही नहीं भोजन-पानी के अभाव में जानवरों की मौतें भी हो रही हैं। इसे रोकने के लिए महामंडलेश्वर दाती जी महाराज ने अभयारण्य में पशुओं के लिए भोजन-पानी की व्यवस्था करने का बीड़ा उठाया है। इसके तहत हर रोज बंदरों को हरी ककड़ी व चना दिया जाता है। साथ ही पक्षियों के लिए बाजरी-ज्वार की व्यवस्था की गई है।